International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 3, March-April 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

नई कविता ने लोकजीवन

Dr. Jugal Kishore Kujur

Assistant Professor (Hindi), Government Shyama Prasad Mukherjee College, Sitapur, Chhattisgarh, India

ABSTRACT

नयी कविता हिन्दी साहित्य में सन् १९५१ के बाद की उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है। नयी कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है। नयी कविता आंदोलन का आरंभ इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था परिमल के कवि लेखकों- जगदीश गुप्त, रामस्वरुप चतुर्वेदी और विजयदेव नारायण साही के संपादन में 1954 में प्रकाशित नयी कविता (पत्रिका) से माना जाता है। इससे पहले अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'दूसरा सप्तक' की भूमिका तथा उसमें शामिल कुछ कवियों के वक्तव्यों में अपनी कवितओं के लिये 'नयी कविता' शब्द को स्वीकार किया गया था। नयी कविता के लिए जगत्-जीवन से संबंधित कोई भी स्थिति, सम्बंध, भाव या विचार कथ्य के रूप में त्याज्य नहीं है। जन्म से लेकर मरण तक आज के मानव-जीवन का जिन स्थितियों, परिस्थितियों, सम्बंधों, भावों, विचारों और कार्यों से साहचर्य होता है, उन्हें नयी कविता ने अभिव्यक्त किया है। नए कवि ने किसी भी कथ्य को त्याज्य नहीं समझा है। कथ्य के प्रति नयी कविता में स्वानुभूति का आग्रह है। नया कवि अपने कथ्य को उसी रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, जिस रूप में उसे वह अनुभूत करता है। नयी कविता वाद-मुक्ति की कविता है। इससे पहले के कवि भी प्रायः किसी न किसी वाद का सहारा अवश्य लेते थे। और यदि कवि वाद की परवाह न करें, किन्तु आलोचक तो उसकी रचना में काव्य से पहले वाद खोजता था-वाद से काव्य की परख होती थी। किन्तु नयी कविता की स्थिति भिन्न है। नया कवि किसी भी सिद्धांत, मतवाद, संप्रदाय या दृष्टि के आग्रह की कट्टरता में फँसने को तैयार नहीं। संक्षेप में, नयी कविता कोई वाद नहीं है, जो अपने कथ्य और दृष्टि में सीमित हो। कथ्य की व्यापकता और सृष्टि की उन्मुक्तता नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है।

How to cite this paper: Dr. Jugal Kishore Kujur "New Poem People Life" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-3, April 2022, pp.1685-1689, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd49821.pdf

IJTSRD49821

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

नई कविता में जीवन का पूर्ण स्वीकार करके उसे भोगने की लालसा है। जीवन की एक-एक अनुभूतियो को, व्यथा को, सुख को, सत्य मानकर जीवन को सघन रूप से स्वीकार करना क्षणो को सत्य मानना है।

नई कविता ने जीवन को न तो एकाी रूप में देखा न केवल महत् रूप में, उसने जीवन को जीवन के रूप में देखा। इसमें कोई सीमा निर्धारित नही की। जैसे- दुःख सबको माँजता है और, चाहे स्वयसबको मुक्ति देना न जाने, किन्तु-जिसको माँजता है, उन्हें यह सीख देता है कि, सबको मुक्त रखें। [1,2]

नई कविता में दो तत्व प्रमुख हैं- अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। वह अनुभूति क्षण की हो या एक समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो या विशिष्ट पुरूष की, आशा की हो या निराशा की, अपनी सच्चाई में कविता के लिए और जीवन के लिए भी अमूल्य है। नई कविता में बुद्धिवाद नवीन यथार्थवादी दृष्टि के रूप में भी है और नवीन जीवन-चेतना की पहचान के रूप में भी। यही कारण है कि तटस्थ प्रयोगशीलता नई कविता के कथ्य और शैली-दोनो की विशेषता है। नया कवि अपने कथ्य के प्रति तटस्थ वृत्ति रखता है, क्योकि उसका प्रयत्न वादो से मुक्त रहने का रहता है। इस विशेषता के कारण नई कविता में कथ्यो की कोई एक परिधि नही है। इसमें तो कथ्य से कथ्य की नई परतें उघड़ती आती हैं। कभी-कभी वह अपने ही कथनो का खण्डन भी कर देता है- ईमानदारी के

कारण। नया कवि ूबकर भोगता है, किन्तु भोगते हुए ूब नही जाता।

नई कविता जीवन के एक-एक क्षण को सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और पूरी चेतना से भोगने का समर्थन करती है। अनुभूति की सच्चाई, जितना वह ले पाता है, उतना ही उसके काव्य के लिए सत्य है। नई कविता अनुभूतिपूर्ण गहरे क्षणो प्रसगो व्यापार या किसी भी सत्य को उसकी आतरिक मार्मिकता के साथ पकड़ लेना चाहती है। इस प्रकार जीवन के सामान्य से सामान्य दीखनेवाले व्यापार या प्रसग नई कविता में नया अर्थ पा जाते हैं। नई कविता में क्षणो की अनुभूतियो को लेकर बहुत-सी मर्मस्पर्शी कविताएँ लिखी गई हैं। जो आकार में छोटी होती हैं किन्तु प्रभाव में अत्यत तीव्र। नई कविता परपरा को नही मानती। इन कवियो ने परपरावादी जड़ता का विरोध किया है। प्रगतिशील कवियो ने परपरा की जड़ता का विरोध इसलिए किया है कि वह लोगो को शोषण का शिकार बनाती है और दुनिया के मजदूरो तथा दलितो को एक झडे के नीचे एकत्र होने में बाधा ालती है। नया कवि उसका विरोध इसलिए करता है कि उसके कारण मानव-विवेक कुठित हो जाता है।

नई कविता सामाजिक यथार्थ तथा उसमें व्यक्ति की भूमिका को परखने का प्रयास करती है। इसके कारण ही नई कविता का सामाजिक यथार्थ से गहरा सबध है। परतु नई कविता की यथार्थवादी दृष्टि काल्पनिक या आदर्शवादी मानववाद से सतुष्ट न होकर जीवन का मूल्य, उसका सौदर्य, उसका प्रकाश जीवन में ही खोजती है। नई कविता द्विवेदी कालीन कविता, छायावाद या प्रगतिवाद की तरह अपने बने-बनाये मूल्यलादी नुस्खे पेश नही करती, बल्कि वह तो उसे जीवन की सच्ची व्यथा के भीतर पाना चाहती है। इसलिए नई कविता में व्यग्य के रूप में कही पुराने मूल्यो की अस्वीकृति है, तो कही हृदय की सच्चाई के भीतर से उगते हुए नए मूल्यो की सभावना के प्रति आस्था। नई कविता ने धर्म, दर्शन, नीति, आचार सभी प्रकार के मूल्यो को चुनौती दी है। नई कविता का स्वर अपने परिवेश की जीवनानुभूति से फूटा है।

नई कविता में शहरी जीवन और ग्रामीण-जीवन-दोनो परिवेशो को लेकर लिखनेवाले कवि हैं। अज्ञेय ने दोनो पर लिखा है। जबकि बालकृष्ण राव, शमशेर बहादुर सिह, गिरिजाकुमार माथुर, कुँवरनारायण सिह, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, विजयदेवनारायण साही, रघुवीर सहाय आदि कवि की सवेदनाएँ और अनुभूतियाँ शहरी परिवेश की हैं तो दूसरी ओर भवानीप्रसाद मिश्र, केदारनाथ सिह, शभुनाथ सिह, ठाकुरप्रसाद सिह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि ऐसे कवि हैं जो मूलतः गाँव की अनुभूतियाँ और सवेदना से जुड़े हैं। इनके अतिरिक्त उसमें जहाँ घुटन, व्यर्थता, ऊब, पराजय, हीन-भाव, आक्रोश हैं, वही आत्मपीड़न परक भावनाएँ भी हैं। नई कविता का परिवेश अपने यहाँ का जीवन है। किन्तु उस पर आक्षेप है कि उसमें अतिरिक्त अनास्था, निराशा, व्यक्तिवादी कुठा और मरणधर्मिता है जो पश्चिम की नकल से पैदा हुई है।[3,4]

नई कविता में पीड़ा और निराशा को कही कही जीवन का एक पक्ष न मानकर समग्र जीवन-सत्य मान लिया गया है। वहाँ पीड़ा जीवन की सर्जनात्मक शक्ति न बनकर उसे गतिहीन करनेवाली बाधा बन गई है। लोक-सपृक्ति नई कविता की एक खास विशेषता है। वह सहज लोक-जीवन के करीब पहुँचने का प्रयत्न कर रही है। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओ की समीक्षा करते हुए प्रोफेसर महावीर सरन जैन का कथन है कि "हिन्दी की नई कविता पर सबसे बड़ा आक्षेप यह है कि उसमें अतिरिक्त अनास्था, निराशा, विशाद, हताशा, कुठा और मरणधर्मिता है। उसको पढ़ने के बाद जीने की ललक समाप्त हो जाती है, व्यक्ति हतोत्साहित हो जाता है, मन निराशावादी और मरणासन्न हो जाता है। यह कि नई कविता ने पीड़ा, वेदना, शोक और निराशा को ही जीवन का सत्य मान लिया है।

नई कविता भारत की जमीन से प्रेरणा प्राप्त नही करती। इसके विपरीत यह पश्चिम की नकल से पैदा हुई है। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ इन सारे आरोपो को ध्वस्त कर देती हैं। मिश्र जी गाँधीवादी है। गाँधी की देश-भक्ति मजिल नही है। गाँधी जी की देश-भक्ति विश्व के जीव मात्र के प्रति प्रेम और उसकी सेवा करने के लिए उनकी जीवन यात्रा का एक पड़ाव है। उनके विचार में कही भी लेश मात्र भी निराशा का भाव नही है। उसमें आशा, विश्वास और आस्था की ज्योति आलोकित है। इसी आलोक के कारण गाँधी जी ने दक्षिण-अफ्रीका और भारत में जो जन-आन्दोलन चलाए उन्होने सम्पूर्ण समाज में नई जागृति, नई चेतना और नया सकल्प भर दिया। उनके जीवन दर्शन से विशाद, निराशा और मरण-धर्मिता नही अपितु इसके सर्वथा विपरीत नई आशा, नई आस्था और नई उमग पैदा होती है। उससे सत्य, अहिसा एवं प्रेम की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। (देखें – प्रोफेसर महावीर सरन जैन: गाँधी दर्शन की प्रासगिकता)। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ इसी कारण समाज में जो विपन्न हैं, लाचार हैं, थके हुए हैं, धराशायी हैं उन सबको सहारा देने के लिए प्रेरित करती हैं, उनको उठाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं"।

नई कविता ने लोक-जीवन की अनुभूति, सौदर्य-बोध, प्रकृत्ति और उसके प्रश्नो को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया। साथ ही साथ लोक-जीवन के बिबो प्रतीको शब्दो और उपमानो को लोक-जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक सवेदनापूर्ण और सजीव बनाया। कविता के ऊपरी आयोजन नई कविता वहन नही कर सकती। वह अपनी अन्तर्लय, बिबात्मकता, नवीन प्रतीक-योजना, नये विशेषणो के प्रयोग, नवीन उपमान में कविता के शिल्प की मान्य धारणाओ से बाकी अलग है।

नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बँधकर नही चलती। सशक्त अभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें अधिक हुआ है। नई कविता में केवल सस्कृत शब्दो को ही आधार नही बनाया है, बल्कि विभिन्न भाषाओ के प्रचलित शब्दो को स्वीकार किया गया है। नए शब्द भी बना लिए गये हैं। टोये, भभके, खिवा, सीटी, ठिठुरन, ठसकना, चि चिड़ी, ठूँठ, विरस, सिराया, फुनगियाना – जैसे अनेक शब्द नई कविता में धड़ल्ले से प्रयुक्त हुए हैं। जिससे इसकी भाषा में एक खुलापन और ताज़गी दिखाई देती है। इसकी भाषा में लोक-भाषा के तत्व भी समाहित हैं।[5,6]

नई कविता में प्रतीको की अधिकता है। जैसे- साँप तुम सभ्य तो हुए नही, न होगे, नगर में बसना भी तुम्हें नही आया। एक बात पूँछु? उत्तर दोगे! फिर कैसे सीखा ँसना? विष कहाँ पाया? (अज्ञेय) नई कविता में बिब भी विपुल मात्रा में उपलब्ध है। नई कविता की विविध रचनाओ में शब्द, अर्थ, तकनीकी, मुक्त

आसप, दिवास्वप्न, साहचर्य, पौराणिक, प्रकृति सम्बन्धी काव्य बिम्ब निर्मित किए गये हैं। जैसे- सामने मेरे सर्दी में बोरे को ओढकर, कोई एक अपने, हाथ पैर समेटे, काँप रहा, हिल रहा,-वह मर जायेगा। (मुक्तिबोध)

नई कविता में छन्द को केवल घोर अस्वीकृति ही मिली हो- यह बात नही,बल्कि इस क्षेत्र में विविध प्रयोग भी किये गये हैं। नये कवियोंमें किसी भी माध्यम या शिल्प के प्रति न तो राग है और न विराग। गतिशीलता के प्रभाव के लिए संगीत की लय को त्यागकर नई कविता ध्वनि-परिवर्तन की ओर बढ़ती गई है। एक वर्ण्य विषय या भाव के सहारे उसका सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करते हुए लम्बी कविता या पूरी कविता लिखकर उसे काव्य-निबन्ध बनाने की पुरानी शैली नई कविता ने त्याग दी है। नई कविता के कवियोंने लम्बी कविताएँ भी लिखी हैं। किन्तु वे पुराने प्रबन्ध काव्य के समानान्तर नहीं हैं। नई कविता का प्रत्येक कवि अपनी निजी विशिष्टता रखता है। नए कवियोंके लिए प्रधान है सम्प्रेषण, न कि सम्प्रेषण का माध्यम। इस प्रकार हम देखते हैं कि नई कविता कथ्य और शिल्प-दोनोंही दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विचार-विमर्श

नई कविता वैश्विक स्तर पर बदलती हुई मानवीय संवेदनाओंको चित्रित करने की कविता है। इसमें किसी प्राचीन परम्परा के आग्रह के प्रति दुराग्रह नहीं है परन्तु उसे आँख मूँदकर स्वीकार कर लेने का भाव भी नहीं है। नई कविता पौराणिक बड़प्पन के स्थान पर समाज का सामान्य अकेला और जिजीविषा से भरा मानव व्यक्तित्व केन्द्र में रखा। इसने उपदेश, ज्ञान, इतिहास आदि से अपने को मुक्त करके प्रतीकोंके नये प्रयोग, टटके बिम्ब ताजे उपमान और मिथकोंके नये सन्दर्भ ग्रहण किये। नई कविता ने पौराणिक चरित्रोंको बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के परिवेश में प्रस्तुत किया और उनको अपने युग के सन्दर्भों और अन्तर्द्वन्दोंके अनुसार ढाला। यथा-धर्मवीर भारती का 'अन्धा युग', नरेश मेहता का 'संशय की एक रात' कुँवर नारायण का 'आत्मजयी' श्री कृष्ण कुमार त्रिवेदी की 'कुरुक्षेत्र से राधा के नाम' आदि ऐसी रचनायें हैं जिनमें चरित्र तो प्राचीन एवं पौराणिक हैं लेकिन उनका चिन्तन और कर्म, उनके हृदय में उठने वाले अर्न्तद्वन्द नितांत आधुनिक है। नई कविता का भविष्य कवियोंकी साधना पर निर्भर करता है। इधर नई कविता लिखने वाले कवियों की संख्या में वृद्धि हुई है यह साहित्य के विकास का एक शुभ लक्षण है यहाँ के कवि जो नई कविता लिख रहे हैं या नई कविता के जो संकलन प्रकाशित हो रहे हैं, उनमें मेहनत और परिमार्जन की आवश्यकता है। यदि ये कवि समाज के बदलते तेवर, मूल्यों की पहचान और भाषा की कसावट पर ध्यान देते रहेंगे तो उनका भविष्य अच्छा रहेगा। नये कवि भाषा के साथ कठिन परिश्रम करें और आज के परिवेश के अर्न्तद्वन्द तथा मनुष्य की कुण्ठा नैराश्य, अकेलेपन को उद्घाटित करने के लिए तदनुरूप भाषा का सृजन करें। सभी कवियोंके प्रति मेरी मंगलकामना है कि वे यशस्वी हों।नई कविता स्वतन्त्रता के बाद लिखी गई वह कविता है जिसमे नवीन भावबोध, नए मूल्य तथा नया शिल्प विधान है। नई कविता मे मानव का वह रूप जो दार्शनिक है, वादोंसे परे है, जो एकान्त मे प्रगट होता है, जो प्रत्येक स्थिति मे जीता है, प्रतिष्ठित हुआ है। नई कविता ने लघु मानव को, उसके संघर्ष को बार-बार उकेरा है।[7,8]

परिणाम

सन 1954 में प्रयोगवादी नाम से असंतुष्टता की गई और प्रयोगवादी कविता को 'नई कविता' का नाम दिया गया। डॉक्टर जगदीश गुप्त और डॉक्टर रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादकत्व में 'नई कविता' नामक अर्धवार्षिक काव्य-संग्रह प्रकाशित होने लगा। इस प्रकार 'नई कविता' नाम प्रचलित हो गया। अतः कहा जा सकता है कि प्रयोगवादी कविता और नई कविता दो विभिन्न धाराएँन होकर एक काव्य धारा के दो पड़ाव हैं। 'प्रयोगवाद' पहला पड़ाव अथवा बाल्यावस्था तथा 'नई कविता' इसका दूसरा पड़ाव 'विकसित अवस्था' माना जा सकता है। 'नई कविता' नाम भी प्रयोगवाद की भाँति भ्रामक ही है। प्रत्येक युग और धारा की कविता अपने से पहले युग की कविता की तुलना में नई होती है। नवीनता तो कविता का सदा से ही गुण रहा है। फिर भी नई कविता भारतीय स्वतन्त्रता के बाद की लिखी गई उन कविताओं का नाम है जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनोंमें पूर्ववर्ती कविता-छायावाद, प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद से भिन्न है। नई कविता के प्राय: वही कवि हैं जो प्रयोगवादी कविता के थे। किंतु उनके जीवन एवं काव्य-विषयक दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। नई कविता शुद्ध साहित्यिक आंदोलन है। यह किसी वाद विशेष से प्रभावित नहीं है।

1 घोर वैयक्तिकता:- नई कविता का प्रमुख विषय निजी मान्यताओं,विचारधाराओं एवं अनुभूतियोंका प्रकाशन करना है। नई कविता अहम के भाव से जकड़ी हुई है। वह आत्म-विज्ञापन का घोर समर्थक है। उदाहरण के लिए कुछ पंक्तियां देखिए-

"साधारण नगर के
एक साधारण घर में
मेरा जन्म हुआ
बचपन बीता अति साधारण
साधारण खान पान।

X X X X

तब मैं एक एकाकी मन
जुट गया ग्रंथों में
मुझे परीक्षा में विलक्षण श्रेय मिला।"

2 निराशा का भाव:- नई कविता में मनुष्य की असहायता, विवशता, अकेलापन, मानवीय-मूल्यों का विघटन, सामाजिक विषमताओं तथा युद्ध के भयंकर परिणामों का चित्रण किया गया है। इसमें कवि के निराश मन का स्वर होता है। कवि अपने चारों ओर प्रश्न ही प्रश्न अनुभव करता है, किंतु उनका उत्तर उसके पास नहीं है-

"प्रश्न तो बिखरे यहां हर ओर हैं,
किंतु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं।"[9,10]

3 नई कविता में आस्था और विश्वास:- नई कविता में निराशा, अनास्था और अविश्वास के साथ-साथ आशा और विश्वास के स्वर भी सुनाई पड़ते हैं। वस्तुतः आरम्भ में इन कवियोंमें घोर निराशा दिखाई देती है। लेकिन बाद में यही कवि आशा और विश्वास से परिपूर्ण कविताएँ लिखते हैं। आशा का स्वर आगे चलकर स्वस्थता का प्रतीक बन गया। कविवर अज्ञेय एक स्थल पर विश्वास करते हुए कहते भी हैं-

"आस्था न काँपे,
मानव फिर मिट्टी का भी देवता हो जाता है।"

4 नई कविता में नास्तिकता:- बौद्धिक एवं वैज्ञानिक युग से सम्बन्धित होने के कारण नई कविता में भावनात्मक दृष्टिकोण से विरोध दिखाई पड़ता है। नए कवि का ईश्वर, भाग्य, मन्दिर और अन्य देवी देवताओं में विश्वास नहीं है। वह स्वर्ग-नरक का अस्तित्व नहीं मानता। भारत भूषण अग्रवाल निम्नलिखित पंक्तियों में देवी देवताओं का उपहास उड़ाते हैं-

'रात मैंने एक सपना देखा
मैंने देखा
गणेश जी टॉफी खा रहे हैं।"

5 नई कविता में व्यंग्य:- नई कविता के कवियों ने आज के युग में व्याप्त विषमताओं का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। व्यंग्यात्मक शैली में जीवन और सभ्यता के चित्रण में कवि को अद्भुत सफलता भी मिली है। श्रीकांत वर्मा ने 'नगरहीन मन' शीर्षक कविता में आज के नागरिक जीवन की स्वार्थपरता, छल-कपटपूर्ण जिंदगी आदि को स्वर दिया है। अज्ञेय की कविता 'साँप' में भी नागरिक सभ्यता का तीक्ष्ण कटाक्ष है-

"साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं, नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ- उत्तर दोगे?
फिर कैसे सीखा डसना
विष कहाँ से पाया?"

6 अति बौद्धिकता:- नई कविता में अनुभव करने की योग्यता कम है अर्थात उसमें क्रियात्मक रूप को प्रकट नहीं किया गया। कवियों ने बुद्धि के द्वारा उछल-कूद को व्यक्त किया है। नया कवि हृदय को प्रकट न करके केवल बुद्धि का ही अधिक आश्रय लेता है। उन्होंने अपनी बुद्धि से समस्याओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की है और अपनी समस्याओं का समाधान भी बौधिकता के धरातल पर खोजते हैं।

7 नई कविता में क्षण का महत्व:- नई कविता का कवि क्षण विशेष की अनुभूति को विशेष महत्व देता है। उसके लिए सुख का एक क्षण सम्पूर्ण जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है। वह क्षण में ही जीवन की सम्पूर्णता के दर्शन करता है-

"एक क्षण: क्षण में प्रवहमान
व्याप्त सम्पूर्णता।"[11,12]

8 भोगवाद और वासना:- नई कविता में क्षणवादी विचारधारा ने ही भोगवाद को जन्म दिया। नई कविता में भोगवाद और वासना का मुख्य स्वर है। नया कवि आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अभाव के कारण "खाओ, पियो और मौज उड़ाओ" सिद्धान्त का पक्षपाती बन गया। इस सिद्धान्त के बहाव में उसने लोक-मर्यादा का उल्लंघन भी किया। वह आत्मिक सौंदर्य की उपेक्षा कर शारीरिक सौंदर्य का वरदान मांगता है। इस प्रकार नई कविता कहीं-कहीं समाज में अश्लीलता, अनैतिकता और अराजकता का वातावरण उत्पन्न करती हुई दिखाई पड़ती है। अज्ञेय की यह पंक्ति इस सन्दर्भ में देखने के योग्य है-

"प्यार है अभिशप्त
तुम कहाँ हो नारी?"

9 भाषा:- नए कवियों ने खड़ी बोली के आधुनिक रूप को अनेक रूपों में प्रयुक्त किया है तथा अनेक नई विशेषताओं एवं क्रिया पदों का भी निर्माण किया है। इन्होंने भाषा के सौंदर्य में वृद्धि के लिए नवीन प्रतीक योजना, बिम्ब-विधान एवं उपमान योजना को भी अपनाया है। प्राकृतिक बिम्ब का एक नवीन उदाहरण दर्शनीय है-

"बूँद टपकी एक नभ से
किसी ने झुक कर झरोखे से
कि कि जैसे हंस दिया हो!"

10 छंद:- नए कवियों ने छंद के बंधन को स्वीकार न करके मुक्त परंपरा में ही विश्वास रखा है। कहीं लोकगीतों के आधार पर अपने गीतों की रचना की है, कहीं अपने क्षेत्र में नए प्रयोग भी किए हैं। कुछ ऐसी भी कविताएँ लिखी हैं जिनमें न लय है न ही गति है बल्कि पद्य की सी शुष्कता और नीरसता है। कुछ नए कवियों ने रुबाइयों, गजलों और सॉनेट पद्धति का भी उपयोग किया है।

11 उपमान, प्रतीक एवं बिम्ब विधान:- नई कविता के कवियों ने सर्वथा नवीन उपमानों, प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग किया है। अज्ञेय तो पुराने उपमानों से तंग आ गए हैं। अतः वे नवीन उपमानों के प्रयोग पर बल देते हैं। नया कवि वैज्ञानिक उपमानों के प्रयोग पर बल देता है। जैसे-

"प्यार का बल्ब फ्यूज हो गया
प्यार का नाम लेते ही
बिजली के स्टोव सी
वो एकदम सुर्ख हो जाती है।"

इन कवियों ने प्राकृतिक, वैज्ञानिक, पौराणिक तथा यौन प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया है। कलात्मक प्रतीक का उदाहरण देखें-

"ऊनी रोएदार लाल-पीले फूलों से
सिर से पाँव तक ढका हुआ
मेरी पत्नी की गोद में
छोटा सा एक गुलदस्ता है।"

नई कविता के बिम्ब का धरातल भी व्यापक है इन कवियों ने जीवन, समाज और उससे सम्बन्धित समस्याओं के लिए सार्थक और सटीक बिम्बों की योजना की है। ये बिम्ब कवि कभी मानव जीवन से सुनता है तो कभी प्रकृति से।

निष्कर्ष

1. भवानी प्रसाद मिश्र

रचनाएँ; सन्नाटा, गीत फरोश, चकित है दुःख।

2. कुंवर नारायण

रचनाएँ; चक्रव्यूह, आमने-सामने, कोई दूसरा नही।

3. शमशेर बहादुर सिंह

रचनाएँ; काल तुझ से होड़ है मेरी, इतने पास अपने, बात बोलेगी हम नहीं।

4. जगदीश गुप्त

रचनाएँ; नाव के पाँव, शब्द दंश, बोधि वृक्ष, शम्बूक।

5. दुष्यन्त कुमार

रचनाएँ; सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, साये में धूप।

6. श्रीकान्त वर्मा

रचनाएँ; दिनारम्भ, भटका मेघ, माया दर्पण, मखध।

7. रघुवीर सहाय

रचनाएँ; हँसो-हँसो जल्दी हँसो, आत्म हत्या के विरुद्ध।

8. नरेश मेहता

रचनाएँ; वनपाखी सुनो, बोलने दो चीड़ को, उत्सव।[13]

संदर्भ

[1] "कविता" । ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। 2013. कविता [...] साहित्यिक कार्य जिसमें विशिष्ट शैली और लय के उपयोग से भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति को तीव्रता दी जाती है; कविताएँ सामूहिक रूप से या साहित्य की एक शैली के रूप में।

[2] "कविता" । मरियम-वेबस्टर । मरियम-वेबस्टर, इंक। 2013। कविता [...] 2: लेखन जो अर्थ, ध्वनि और लय के माध्यम से एक विशिष्ट भावनात्मक प्रतिक्रिया बनाने के लिए चुनी गई और व्यवस्थित भाषा में अनुभव की एक केंद्रित कल्पनाशील जागरूकता तैयार करता है।

[3] "कविता" । डिक्शनरी डॉट कॉम । डिक्शनरी डॉट कॉम, एलएलसी। 2013. कविता [...] 1 सुंदर, कल्पनाशील, या उच्च विचारों द्वारा रोमांचक आनंद के लिए लिखित या बोली जाने वाली लयबद्ध रचना की कला।

[4] रूथ फिननेगन, ओरल लिटरेचर इन अफ्रीका , ओपन बुक पब्लिशर्स, 2012।

[5] स्ट्रैचन, जॉन आर; टेरी, रिचर्ड, जी (2000)। कविता: एक परिचय । एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 119. आईएसबीएन 978-0-8147-9797-6.

[6] एलियट, टीएस (1999) [1923]। "आलोचना का कार्य"। चयनित निबंध । फैबर और फैबर। पीपी. 13-34. आईएसबीएन 978-0-15-180387-3.

[7] लोंडेनबैक, जेम्स (1997)। आधुनिकता के बाद आधुनिक कविता । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पीपी. 9 , 103. आईएसबीएन 978-0-19-510178-2.

[8] श्मिट, माइकल, एड. (1999)। अंग्रेजी में ट्वेंटिएथ-सेंचुरी पोएट्री की हार्विल बुक । हार्विल प्रेस। पीपी. xxvii-xxxiii । आईएसबीएन 978-1-86046-735-6.

[9] होविक, एस; लुगर, के (3 जून 2009)। "जैव विविधता संरक्षण के लिए लोक मीडिया: हिमालय-हिंदू कुश से एक पायलट परियोजना"। अंतर्राष्ट्रीय संचार राजपत्र । 71 (4): 321-346. डोई: 10.1177/1748048509102184 । S2CID 143947520 ।

[10] गुडी, जैक (1987). लिखित और मौखिक के बीच का इंटरफ़ेस । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 78 . आईएसबीएन 978-0-521-33794-6. [...] कविता, किस्से, विभिन्न प्रकार के पाठ लेखन शुरू होने से बहुत पहले मौजूद थे और ये मौखिक रूप एक लिखित साहित्य की स्थापना के बाद भी संशोधित 'मौखिक' रूपों में जारी रहे।

[11] गुडी, जैक (1987)। लिखित और मौखिक के बीच का इंटरफ़ेस । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 98 . आईएसबीएन 978-0-521-33794-6.

[12] सैंडर्स, एनके (ट्रांस।) (1972)। गिलगमेश का महाकाव्य (संशोधित संस्करण)। पेंगुइन किताबें। पीपी. 7-8.

[13] मार्क, जोशुआ जे। (13 अगस्त 2014)। "दुनिया की सबसे पुरानी प्रेम कविता" । '[...] जो मेरे हाथ में था वह मनुष्य के हाथ से लिखे गए सबसे पुराने प्रेम गीतों में से एक था [...]।'